ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

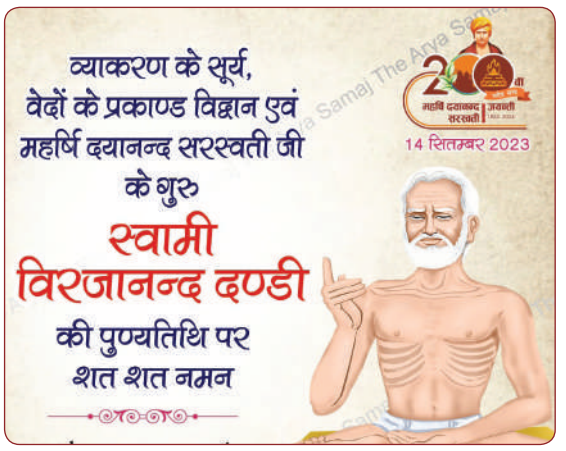

वर्ष 46 | अंक 39 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 11 सितम्बर, 2023 से रविवार 17 सितम्बर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जी-20 शिखर सम्मेलन की अपार सफलता और महत्वपूर्ण उपलब्धियां

आर्य समाज की ओर से समस्त देशवासियों एवं विश्व समुदाय को बधाई

भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रतीक चिन्हों को वैश्विक आयोजनों में महत्व देना, नए भारत की पहचान

ताजमहल की जगह नालंदा और सूर्य मंदिर कोणार्क को महत्व देकर बढ़ाया भारत का गौरव

सबसे बड़ा राष्ट्र होता है, इसके बाद राज्य, महानगर, जिले, तहसील, ब्लाक, और शहर तथा गांव, गली-मोहल्ले और फिर घर एवं उनमें रहने वाला प्रत्येक नागरिक। 8 से 10 सितम्बर 2023 की ऐतिहासिक तिथियों के बीच भारत में जी-20 के शिखर सम्मेलन की अपार सफलताओं से संपूर्ण भारत वासी गदगद हैं। क्योंकि इस जी-20 शिखर सम्मेलन की जितनी प्रशंसा की जाए शायद कम ही होगी। जब दुनिया में दो बड़े ध्रुवों के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष युद्ध चल रहा हो तब किसी वैश्विक मंच पर पूरी दुनिया के लिए एक घोषणा पत्र जारी होना अपने आप में सुखद और कल्याण-कारी संकेत है। भारत को तन मन धन से अपने अथक प्रयासों के चलते ही यह कामयाबी प्राप्त हुई है, भारत के गुटनिरपेक्षता या स्वतंत्र चेतना ने भी शिखर सम्मेलन को सफल बनाया है। वैश्विक कूटनीति के मंच पर एक उत्तम आयोजन वही माना जाता है जो

भारत के बिना सुरक्षा परिषद अप्रासंगिक -नरेन्द्र मोदी

"आज भारत राष्ट्र नित नए आयाम और एक से बढ़कर एक महान कीर्तिमान स्थापित कर विश्व पटल पर यह सिद्ध कर रहा है कि हम पुन: विश्वगुरु बनने के मार्ग पर अग्रसर हैं। पृथ्वी ग्रह से लेकर अंतरिक्ष तक भारत की आन, बान और शान परम प्रतीक तिरंगा अपने वैभव शाली गौरव के साथ लहरा रहा है। इस महत्वपूर्ण अनुक्रम में 8 से 10 सितम्बर 2023 के बीच जी-20 शिखर सम्मेलन का दिल्ली में अपार ऐतिहासिक सफलताओं के साथ संपन्न होना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। भारत राष्ट्र अपनी अद्भुत, अनुपम और ऐतिहासिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से विश्व को परिचित कराते हुए उन्नति, प्रगति के पथ पर निरंतर आगे से आगे बढ़ रहा है।

उपरोक्त उपलब्धियों के लिए आर्य समाज सभी देशवासियों और विश्व समुदाय को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान करते हुए गौरव का अनुभव कर रहा है।"

मैत्री के प्रयासों में अपनी ओर से कुछ जोड़कर दुनिया को उत्कृष्ट बनाने की कोशिश में सफलता प्राप्त करता है। रविवार को जी-20 के आयोजन के समापन की घोषणा हो गई और ब्राजील में जब जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन होगा तब भारत के आयोजन को याद किया जाएगा। सही मायने में उस समय इसकी तुलना भी होगी और दुनिया अनुभव करेगी कि भारत के आयोजन से विश्व स्तर पर क्या संदेश पहुंचा था और उस वर्तमान समय में क्या उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, इसका आकलन अवश्य होगा। किंतु आज हम भविष्य की कल्पना न करते हुए जी-20 2023 की सफलताओं पर स्वयं को केंद्रित करते हैं।

इस शिखर सम्मेलन का आरंभ ही महत्वपूर्ण सफलता से हुआ, जब इस वैश्विक परिवार में अफ्रीकी संघ को स्थाई सदस्यता प्राप्त हुई और जिससे यह सुनिश्चित हो गया कि आगामी

- शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

तीन रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल किए स्थापित

पहले चरण में और सात स्टाल होंगे निर्मित– आर्यजन सहयोग दें

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस ये दोनों ऐसे स्वर्णिम अवसर हैं, जब हम आर्यों को महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों तथा मान्यताओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अत्यधिक परिश्रम और पुरुषार्थ करना ही चाहिए। इसी भावना को साकार करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 10 भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित करने का संकल्प लिया है। जिनमें आगरा के दो रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार प्रारंभ हो गया है और मथुरा रेलवे स्टेशन पर भी स्टॉल का कार्य लगभग पूरा हो चुका है। इसके अतिरिक्त अभी सात अन्य रेलवे स्टेशनों पर भी वैदिक

साहित्य के स्टाल निर्मित किए जाएंगे।

अत: सभी आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और आर्य परिवारों से निवेदन है की वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिल खोलकर सहयोग देंवे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी ओर से तथा अपने परिजनों के नाम से अथवा अपनी संस्था की ओर अवश्य योगदान देकर महर्षि के उदघोष **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को सफल बनाने हेतु आगे आएं।

-सभा महामंत्री

वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु कृपया अपनी दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करायें-
Delhi Arya Pratinidhi Sabha-Vedic Prakashan
Doner's account A/c No : 910010009140900
IFSC CODE : UTIB0002193 Axis Bank Connaught Place

ओ३म्
आर्य समाज की पहल
आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों
के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना
आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2023
- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।
आवेदन की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2023
आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com पर जाए।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

वेदवाणी-संस्कृत

सनातन और नवीन का अद्भुत समन्वय

वेद-स्वाध्याय

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः॥
-अथर्व० 10 । 8 । 23
ऋषिः-कुत्सः॥ देवता-आत्मा॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **एनम्**=इस देव को **सनातनम्**=सनातन, अनादिकालीन **आहुः**=कहते हैं, **उत**=और तो भी यह **अद्य**=आज, प्रतिदिन **पुनः नवः**=फिर-फिर नया **स्यात्**=होता है। देखो, **अन्यः**=एक **अन्यस्य**=दूसरे के **रूपयोः**=रूपों में, समान रूपों में ही **अहोरात्रे**=ये दिन-रात **प्रजायेते**=सदा पैदा होते रहते हैं।

विनय- विरले ही मनुष्य होते हैं जिन्हें कि आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि की चर्चा रोज-रोज रुचती है, आनन्ददायी लगती है। हम साधारण लोगों को तो यह चर्चा पुरानी, जीर्ण, घिसी हुई, बासी और नीरस ही लगती है। जब हमें रोज-रोज समाज-मन्दिर की वेदकथा में जाने को, नैत्यिक प्रार्थना में उपस्थित होने को या दैनिक भजन-कीर्तिन में सम्मिलित होने को कहा जाता है तो हम प्रायः कहते हैं ''हम वहाँ जाकर क्या करेंगे? वहाँ तो रोज वही एकरस मामला चलता है, वहाँ कुछ नई बात तो मिलती नहीं।'' वास्तव में यह सच है कि जिसमें कुछ नई चीज न मिलती हो, कुछ नवीनता न होती हो, वह वस्तु हमें कभी रसदायी नहीं हो सकती, आनन्ददायी नहीं हो सकती। जिन लोगों को प्रतिदिन ईश्वर-भजन करने में आनन्द आता है उन्हें इसलिए आनन्द आता है, क्योंकि सचमुच उन भक्तों के लिए वे प्रभु नित्य नये होते रहते हैं, नित्य नया जीवन देते हुए मिलते हैं, हमें ईश्वर का ध्यान करने में तभी रुचि होती है जब उसका ध्यान हमें नित्य नया आनन्द देता है। सच्चा जप करने वाला वही है जिसे प्रभु का महापुराना नाम लेते हुए और उसे बार-बार लेते हुए भी प्रत्येक बार में प्रभुनाम के उच्चारण से नया-नया उत्साह, नया-नया ज्ञान, नई-नई भक्ति की उमंग और नया-नया प्रेम का रस मिलता है। अरे मेरे भाइयो! ये दिन-रात कितने पुराने हैं, उन्हें तुम भी अपने जन्मदिन से लेकर आज तक बिलकुल उसी एक रूप में रोज-रोज आते हुए देख रहे हो, फिर भी ये तुम्हें पुराने, घिसे हुए, नीरस क्यों नहीं लगते? इसका कारण यह है कि दिन-रातों में तुम जीवन पाते रहे हो, प्रतिदिन विकसित होते गए हो। इसी तरह जब तुम उस परमेश्वर में रहने लगोगे, उसमें प्रतिदिन आध्यात्मिक विकास पाने लगोगे तो तुम भी कह उठोगे- ''वह अनादिकालीन पुराना सनातन प्रभु मेरे लिए प्रतिदिन फिर-फिर नया होता है, प्रत्येक आज में, प्रत्येक नये दिन में फिर-फिर नया होता है।''

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

सनातन धर्म का अपमान नहीं सहेगा- भारत राष्ट्र

'सं गच्छध्वं सं वदध्वं' वेद के संदेश को अपनाएं, सनातन धर्मी

इस सृष्टि को बने हुए एक अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 124 वर्ष हो गए हैं। इतने ही वर्ष पुराना है सत्य सनातन वैदिक धर्म। यह अलग बात है की सृष्टि के आरंभ में वैदिक धर्म की पावनी गंगा का स्वरूप बिल्कुल ऐसा ही था जैसे गोमुखी से गंगा प्रकट होती है या यमुनोत्री से यमुना निकलती है। अपने उद्गम स्थल पर दोनों प्रमुख नदियों का जल शतप्रतिशत शुद्ध होता है लेकिन जैसे-जैसे ये नदियां मैदानी क्षेत्रों में आगे बढ़ती हैं तो उनमें नदी नाले और केमिकल युक्त फैक्ट्रियों का पानी मिलता जाता है, जिससे वे मालिन होती जाती हैं। वस्तुतः सृष्टि के आरंभ से लेकर वर्तमान युग तक अगर धर्म की बात की जाएगी तो केवल और केवल एक ही वैदिक धर्म है। अन्य जितने भी मत मतांतर और संप्रदाय प्रचलित हैं वह अपने आप में मनगढ़ंत और काल्पनिक हैं, रूढ़िवादी सोच के परिणाम हैं। धर्म एक विचार है, धर्म एक जीवन जीने की कला है, धर्म एक व्यवस्था है, धर्म एक आदर्श मानव जीवन जीने का आधार है, जिस पर चलकर मनुष्य अपनी उन्नति, प्रगति और सफलता की प्राप्ति के साथ-साथ राष्ट्र और मानव सेवा के लिए भी परिश्रम और पुरुषार्थ करता है।

आधुनिक परिवेश में राजनीतिक दलों द्वारा धर्म के ऊपर राजनीति करना एक परंपरा सी बन गई है। यहां पर आर्य समाज का स्पष्ट मानना है कि राजनीति में तो धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म को लेकर राजनीति करना यह अत्यंत अशोभनीय और अमानवीय सोच तथा कृत्य है। सत्य सनातन वैदिक धर्म को लेकर तो जिस तरह की बयानबाजी चल रही है वह तो बिल्कुल बर्दाश्त से बाहर की बात है। जितने भी मत मतांतर हैं, जितने भी संप्रदाय हैं अथवा जितने भी मतावलंबी हैं, वे सत्य सनातन धर्म पर बोलने से पहले यह विचार नहीं करते कि तुम्हारे मत की आयु कितनी छोटी है और तुम बडबोले पन में इतना अनाप-शनाप बोलते हो, सबसे प्राचीन सनातन धर्म को गाली देते हो, इससे तुम्हें क्या लाभ होने वाला है? यह बिल्कुल ऐसा ही प्रयास है जैसे कोई सूरज के ऊपर कीचड़ उछाले, या सूरज को गाली देने का कुत्सित प्रयास करे, इससे सूरज की तो कोई हानि होने वाली नहीं है। लेकिन यहां पर संपूर्ण हिंदू संगठनों को हम यह अवश्य कहना चाहते हैं कि महर्षि वेदव्यास के अनुसार 'धर्मो रक्षितो रक्षितः' की सूक्ति को विस्मृत न करें, क्योंकि धर्म भी हमारी रक्षा तभी करता है जब हम धर्म की रक्षा करते हैं इसलिए सहिष्णु होने का मतलब यह नहीं कि हम धर्मभीरू बन जाएं। इसलिए समय रहते हमें जागना होगा और अपने लक्ष्य और उद्देश्य को समझ कर सत्य सनातन धर्म को बीमारी बताने वाले दुष्टों को यह समझना होगा कि किसी भी स्थिति में हम इस षड्यंत्रकारी सोच और साजिश को कामयाब नहीं होने देंगे।

> **"आधुनिक परिवेश में राजनीतिक दलों द्वारा धर्म के ऊपर राजनीति करना एक परंपरा सी बन गई है। यहां पर आर्य समाज का स्पष्ट मानना है कि राजनीति में तो धर्म होना चाहिए लेकिन धर्म को लेकर राजनीति करना यह अत्यंत अशोभनीय और अमानवीय सोच तथा कृत्य है। सत्य सनातन वैदिक धर्म को लेकर तो जिस तरह की बयानबाजी चल रही है वह तो बिल्कुल बर्दाश्त से बाहर की बात है। जितने भी मत मतांतर हैं, जितने भी संप्रदाय हैं अथवा जितने भी मतावलंबी हैं, वे सत्य सनातन धर्म पर बोलने से पहले यह विचार नहीं करते कि तुम्हारे मत की आयु कितनी छोटी है और तुम बडबोले पन में इतना अनाप-शनाप बोलते हो, सबसे प्राचीन सनातन धर्म को गाली देते हो, इससे तुम्हें क्या लाभ होने वाला है? यह बिल्कुल ऐसा ही प्रयास है जैसे कोई सूरज के ऊपर कीचड़ उछाले, या सूरज को गाली देने का कुत्सित प्रयास करे, इससे सूरज की तो कोई हानि होने वाली नहीं है। लेकिन यहां पर संपूर्ण हिंदू संगठनों को हम यह अवश्य कहना चाहते हैं कि महर्षि वेदव्यास के अनुसार 'धर्मो रक्षितो रक्षितः' की सूक्ति को विस्मृत न करें, क्योंकि धर्म भी हमारी रक्षा तभी करता है जब हम धर्म की रक्षा करते हैं इसलिए सहिष्णु होने का मतलब यह नहीं कि हम धर्मभीरू बन जाएं। इसलिए समय रहते हमें जागना होगा और अपने लक्ष्य और उद्देश्य को समझकर सत्य सनातन धर्म को बीमारी बताने वाले दुष्टों को यह समझाना होगा कि किसी भी स्थिति में हम इस षडचंत्रकारी सोच और साजिश को कामयाब नहीं होने देंगे।"**

आजकल क्षुद्र राजनीति करने वाले लोग इतने निरंकुश होते जा रहे हैं कि वे मनमाने तरीके से सत्य सनातन धर्म को बीमारी और महामारी कहकर उसे मिटाने की बात करते हैं। ऐसे लोगों को आप दीमक समझिए ये लोग तो जबसे जन्मे हैं तब से भारत राष्ट्र और भारतीयों को मिटाने की ही कोशिश कर रहे हैं। लेकिन सनातन धर्म ऐसा वट वृक्ष नहीं है कि इनके डंक से कभी नष्ट नहीं हो पाएगा। यह तो वह मजबूत स्तंभ है जिसमें इनके आका भी सिर मार-मार कर जाते रहे। लेकिन तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन के बेटे उदयनिधि ने जब सनातन धर्म की तुलना कोरोना वायरस, मलेरिया और डेंगू बुखार से की तो उस समय उसकी सोच क्या रही होगी? यह हमें अवश्य सोचना चाहिए। हमें यह भी विचार करना चाहिए कि उसकी हिम्मत कैसे हो गयी इस तरह की बेतुकी बात कहने की? और उसकी ही नहीं उससे पहले भी रामचरितमानस पर स्वामी प्रसाद मौर्य ने विवादित बयान दिया था, स्वामी प्रसाद मौर्य ने रामचरितमानस को बकवास बताते हुए इससे विवादित अंश बाहर करने या इसे बैन करने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि इसे तुलसीदास ने अपनी खुशी के लिए लिखा है। स्वामी प्रसाद ने लंपट, दुराचारी, अनपढ़ गंवार ब्राह्मण को भी पूजनीय बताने और शूद्र के ज्ञानी, विद्वान होने पर भी उसका सम्मान करने वाले अंश का जिक्र करते हुए सवाल किया था कि क्या यही धर्म है? रामचरितमानस को लेकर स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान पर समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता ने उनका समर्थन किया था सपा प्रवक्ता ने भी तुलसीदास की उन चौपाइयों को हटाने की मांग की है, जिनको लेकर स्वामी प्रसाद मौर्य ने बयान दिया था।

स्वामी प्रसाद मौर्य के रामचरितमानस पर दिए गए बयान को अभी तक कई नेता निजी बताते रहे हैं, लेकिन अब पार्टी के आधिकारिक प्रवक्ता ने ही उनका समर्थन करते हुए उन्हें हटाने की मांग भी कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि आज चारों तरफ वोट की राजनीति करने के लिए व्यक्ति किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। इन षड्यंत्रकारी और बद जुबानी करने वाले नेताओं को केवल और केवल वोट चाहिए इसके लिए ये किसी भी कीमत तक गिर सकते हैं लेकिन इन्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि सनातन

- शेष पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

अमृत की तलाश

पन्द्रह वर्षों तक जिज्ञासु महर्षि दयानन्द ने पहाड़ों और मैदानों को नाप डाला। इतने शारीरिक कष्ट सहे और तपश्चर्या की यह सब किस लिए? सत्ययोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए। परन्तु न हिमालय की सर्दी में दिल की आग बुझी और न गंगा व नर्मदा के जलों ने ज्वाला को शान्त किया। जिज्ञासु महर्षि अब दण्डी स्वामी के द्वार पर विद्या के स्रोत में हृदय का ताप बुझाने पहुंचते हैं। चलो पाठक! देखें कि उन्हें वहां कहां तक सफलता प्राप्त होती है।

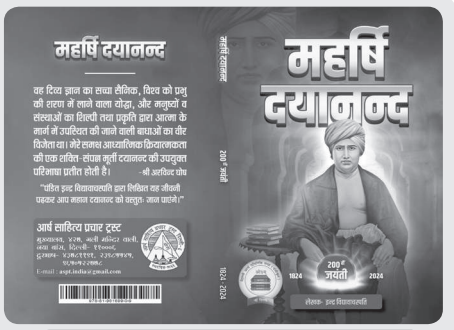

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

बदरीनारायण के आसपास योगी के दर्शन करने की अभिलाषा में निराश होकर जिज्ञासु ने स्थल की ओर मुंह मोड़ा। रामपुर, द्रोणसागर और मुरादाबाद होते हुए आप गढ़मुक्तेश्वर पहुंच गए। गंगा के किनारे घूम रहे थे। प्रवाह में बहता हुआ एक मुर्दा उन्हें दिखाई दिया। दयानन्द ने हठयोग प्रदीपिका आदि में शरीर के आभ्यन्तर अंगों के सम्बन्ध में बहुत-कुछ पढ़ रखा था। उनके सत्यासत्य निर्णय का उचित अवसर जानकर आप पानी में कूद पड़े और मुर्दे को किनारे पर खींच लिया। लाश किनारे पर रखकर चाकू से चीर-फाड़ की तो उन ग्रन्थों का बोझ उठाने से कोई लाभ न देखकर महर्षि दयानन्द ने उन सबको फाड़कर गंगा-प्रवाह में अर्पण कर दिया। गंगा तट का भ्रमण करके महर्षि जी दक्षिण की ओर जा निकले और बहुत दिनों तक नर्मदा के तट पर घूमते रहे। वहां बड़े-बड़े घने जंगल हैं। एक जंगल में आपका एक बड़े भालू से सामना हो गया। भालू को देखकर वह डरे नहीं, प्रत्युत अपना सोटा उठाकर उसकी ओर को बढ़ाया। सोटे से डरकर चिंघाड़ता हुआ वह भालू जंगल में भाग गया। अंधेरे में कहीं ठहरने का स्थान ढूंढते ढूंढते जंगल में कुछ कुटियां दिखाई दीं। पास जाने पर कोई जागता हुआ प्राणी न मिला तब सारी रात आपने एक वृक्ष पर बैठकर गुजारी। प्रातः काल जब ग्रामवासियों ने एक संन्यासी को देखा तो रात के कष्ट के लिए बहुत क्षमा मांगी और उचित आदर-सत्कार किया।

नर्मदा के तट पर महर्षि दयानन्द ने लगभग तीन वर्ष भ्रमण किया। भ्रमण में आपने सुना कि मथुरा में एक योगी और दण्डी विद्वान् रहते हैं। योग और विद्या के अभिलाषी ने यह समाचार सुनते ही मथुरा की ओर मुंह मोड़ा और कार्तिक सुदी 2, सम्वत् 1917, तदनुसार 14 नवम्बर 1860 के दिन मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी का दरवाजा जा खटखटाया।

पन्द्रह वर्षों तक जिज्ञासु महर्षि दयानन्द ने पहाड़ों और मैदानों को नाप डाला। इतने शारीरिक कष्ट सहे और तपश्चर्या की यह सब किस लिए? सत्ययोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए। परन्तु न हिमालय की सर्दी में दिल की आग बुझी और न गंगा व नर्मदा के जलों ने ज्वाला को शान्त किया। जिज्ञासु महर्षि अब दण्डी स्वामी के द्वार पर विद्या के स्रोत में हृदय का ताप बुझाने पहुंचते हैं। चलो पाठक! देखें कि उन्हें वहां कहां तक सफलता प्राप्त होती है।

स्वास्थ्य संदेश

श्वास सम्बंधी बीमारियां -लक्षण और उपचार

क्रमशः गतांक से आगे

धूल भरी हवा में सांस लेने, कई पेड़ों, पौधों, फूलों, दवाइयों, कई जानवरों के बालों तथा कई पक्षियों के परों की गंध से भी कई व्यक्तियों को दमा का दौरा पड़ जाता है। कई बच्चों को कई तरह की मानसिक परेशानियों के कारण भी अचानक दमे का दौरा पड़ जाता है। वनस्पति घी के अधिक सेवन, कई खास धातुओं से संबंधित उद्योग धन्धों, चीनी मिलों तथा खान में काम करने वाले लोगों में भी यह रोग अधिक देखा गया है। जिनका शरीर किसी अन्य कारण से अस्वस्थ हो ऐसे कई रोगियों को भी यह रोग हो जाता है। अब एक मत यह भी है कि अभी तक यह पता नहीं चल सकता है कि दमा क्यों होता है- No one knows eñactly why asthma happens.

आजकल कुल जनसंख्या के लगभग 5 प्रतिशत लोगों को दमा का रोग है। यह रोग बच्चों में अपेक्षाकृत अधिक है। प्रयोगशाला की कई प्रकार जांच से दमा का पता लग जाता है। विभिन्न पद्धतियों में इस रोग के कई इलाज हैं, यद्यपि अभी तक कोई संतोषजनक इलाज नहीं है। दमा से मरने वाले रोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। दुःख की बात तो यह है कि कई लोग अज्ञानवश कुछ नीम हकीम व्यक्तियों के चक्कर में आ जाते हैं जो उन्हें देसी दवा में सटीरोयड मिलाकर देते हैं। यह दवा एकदम तो कुछ दिनों के लिए चमत्कारी असर करती है पर इसका अधिक सेवन शरीर को बहुत नुकसान करता है। हमने

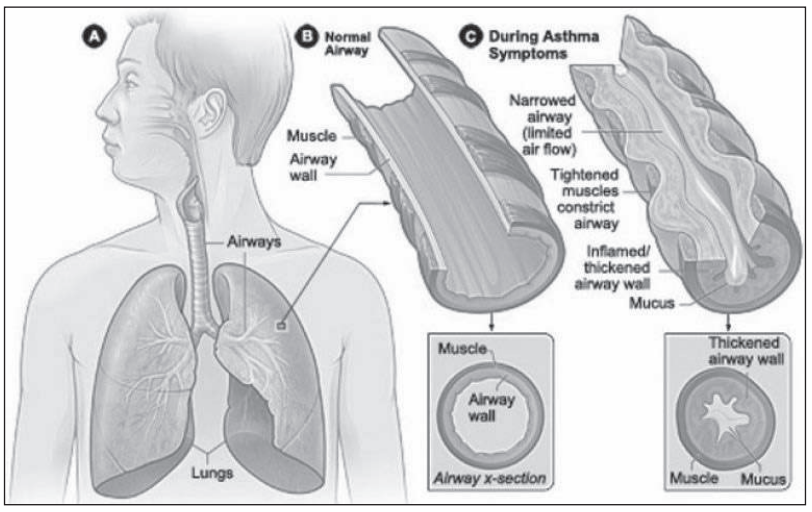

अनेक रोगियों की इस प्रकार की दवा प्रयोगशाला से टेस्ट करवाई है जिसमें सटीरोयड का मिश्रण पाया गया है।

ब्रांकाइटिस (Bronchitis) वायु नली की सूजन का रोग है। यह आमतौर पर ठंड लगने तथा कीटाणुओं के आक्रमण के कारण होता है। इस रोग में सांस लेने में तकलीफ, खांसी तथा ज्वर हो जाता है। प्रायः गला सूखने लगता है यथा जलन-सी अनुभव होती है। ब्रांकाइटिस में रोगी के खांसने पर उसका चेहरा प्रायः नीला सा पड़ जाता है। ब्रांकाइटिस दो प्रकार का होता है acute bronchitis or chronic bronchitis. Acute bronchitis के बारे में कहा गया है- inflammation of the bronchial tubes may be caused by viral or bacterial infections. Bronchitis occurs more frequently in winter and more commonly in cold damp climates. Commencing as a common cold or infection of the throat, nose or sinuses, the inflammation may spread into the chest. Chronic bronchitis इस रोग की बढ़ी हुई अवस्था है- Chronic bronchitis is a degenerative disease. After repeated attacks of bronchitis, the walls of the bronchial tubes become thickened, inelastic and narrowed. The mucous membranes of the bronchi are permanently inflamed and the airways become filled with tenacious (sticky) mucus.

फेफड़ों के रोगों में निमोनिया (Pneumonia-inflammation of the lungs), फेफड़ों के आवरण की सूजन प्लरिसी (pleurisy), तथा फेफड़ों का फुलाव कम होना (emphysema) रोगों की स्थिति में डॉक्टरी इलाज के साथ अगर एक्युप्रेशर द्वारा इलाज किया जाए तो ये रोग बहुत शीघ्र दूर हो जाते हैं।

1- **निमोनिया (Pneumonia)** में फेफड़ों में सूजन, खांसी तथा सांस लेने में तकलीफ होती है। सिर दर्द, छाती में हलका सा दर्द, बेचैनी तथा अधिक प्यास लगना भी इस रोग के कुछ अन्य लक्षण हैं। यह रोग भारी ठंड के कारण होता है। गलत रहन-सहन तथा अच्छा भोजन न करने से भी यह रोग हो जाता है।

फेफड़ों के अन्दर जब विषैला पदार्थ जमा हो जाता है तो वह फेफड़ों के आवरण (pleura) तक भी पहुंच जाता है जिससे आवरण में सूजन आ जाती है जो कष्टदायी बन जाती है। इस तकलीफ को प्लूरिसी (pleurisy) कहते हैं। यह रोग फेफड़ों के किसी अन्य रोग, ठंड लगने, गुर्दे तथा जोड़ों के रोगों के कारण भी हो जाता है। फेफड़ों का फुलाव कम हो जाने के कारण सांस लेने में काफी कठिनाई होती है।

2- **एलर्जीस (Allergies)** कई प्रकार की हैं। एक्युप्रेशर के अतिरिक्त एलर्जी की जांच करवा के उस वस्तु से परहेज करना चाहिए जिससे एलर्जी होती है।

3- **खांसी (Cough)** के कई कारण हो सकते हैं। यह दमा, हृदय रोगों, वायु नली में विकार, थायरॉयड ग्रन्थि में सूजन तथा अधिक बलगम बनने के कारण होती है। धुएं-धूल वाले गंदे वातावरण में रहने, शरीर में अम्लता बढ़ने, अंतड़ियों में हवा भरने तथा फेफड़ों में रक्त इकट्ठा

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

विश्व बन्द्य महर्षि के जन्म से- कवि अखिलेश मिश्र

मुल्लनि, महन्तनि, मुसइन, इसाइन को,
पूत पहुमी पै जब चहुंधा पसार भो।
'अखिलेस' फैल्यो खूब ढोंग पोप पंथिन को,
पोंगनि को अचल-अखण्ड-अधिकर भो।।
भूले से भ्रमे से भभरे से भकुआने सब,
साने कुविचार में नसत सु विचार भो।
करन बलन्द धर्म-धुजा भूमि भारत में,
द्वन्दहर तब दयानन्द अवतार भो।।

शब्दार्थ- बलन्द-ऊंचा। द्वन्दहर-विपत्ति हरने वाले।

भावार्थ- जब भारतवर्ष की पवित्र पृथ्वी पर मुल्लाओं, महन्तों, मूसाइयों और ईसाइयों का चारों तरफ खूब जोर हुआ, अखिलेश कवि कहते हैं कि पोपों का खूब ढोंग फैलने लगा और मूर्खों का अचल अखण्ड अधिकार स्थापित हो गया, सब लोग भ्रम से भयभीत होकर भटककर हतबुद्धि हो गये और सुविचार को गंवाकर अविवेक के दास बन गये, तब धर्म की ध्वजा ऊंची करने के लिए विपत्ति हरने वाले महर्षि दयानन्द का अवतार हुआ।

अलंकार- समाधि-द्वितीय समुच्चय

पीरी परी अनय-असत्य-अविवेक-अनी,
पीरे परे पातक बिलोकि रिखिराज को।
'अखिलेस- पीरो मुख पापन पुरानन को,
पीरो तन कौलन औ मौलन के राज को।।
पीरी परी पादरी-प्रपंचिन की नीति-रीति,
पीरो परो दम्भी दल दुरग दुराज को।
जनमत एकैं बिस्वबन्द्य दयानन्द जू के,
रंग भो हरित सूद्र-विधवा-समाज को।।

शब्दार्थ- कौलन-वाममार्गियों। पादरी-ईसाई प्रचारक। दुरगकिला।

भावार्थ- विश्वबन्द्य महर्षि दयानन्द के जन्म लेते ही अन्याय असत्य अज्ञान की सेना पीली पड़ गई तथा ऋषीश्वर को देखते ही पाप भी पीले पड़ गये। अखिलेश कवि कहते हैं कि पोपों और पुराणों का मुख पीला पड़ गया। वाममार्गियों और मुल्लाओं का शरीर भी पीला पड़ गया। प्रपंची पादरियों की नीति रीति भी पीली पड़ गई एवम् दम्भियों के समूह और कुराज्य के दुर्ग (किला) भी पीले पड़ गये। परन्तु शूद्रों और विधवाओं के रंग हरे हो गये अर्थात् उनको प्रसन्नता प्राप्त हुई।

अलंकार- प्रथम व्याघात

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

पृष्ठ 1 का शेष

जी-20 शिखर सम्मलेन की अपार सफलता और महत्वपूर्ण उपलब्धियां

शिखर सम्मेलन जी-21 कहलाएगा। इस शिखर सम्मेलन की वसुधैव कुटुम्बकम की थीम, भारतीय सोच और संस्कृति को साकार करते हुए दुनिया की महाशक्तियां एवं समस्त बड़े देशों को भारत एक साथ, एक मंच पर लाया जो कि भारत के लिए एक विशेष उपलब्धि विश्व स्तर पर मानी जा रही है। इस सम्मेलन के सुखद और कल्याणकारी परिणामों की चारों ओर खूब सराहना की जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन के पहले दिन ही स्वच्छ ऊर्जा के मामले में भारत की ओर से एक महत्वपूर्ण पहल का ऐलान करते हुए ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस लॉन्च करने की घोषणा की जिसमें भारत के अलावा अमेरिका और ब्राजील इस नए अलायंस के फाउंडिंग मेंबर हैं, ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस के लॉन्च होने के बाद तीनों फाउंडिंग मेंबर्स समेत अर्जेंटीना और इटली जैसे कुल 11 देश इससे जुड़ गए हैं।

जी-20 शिखर सम्मेलन में रूस-यूक्रेन युद्ध पर प्रमुख मतभेदों से पार पाते हुए एक सर्वसम्मत घोषणापत्र को अपनाया गया। सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक विश्वास की कमी को समाप्त करने का जोरदार आह्वान किया, इतना ही नहीं 32 पन्नों वाले इस खास घोषणापत्र में सभी देशों की आम सहमति हासिल की गई है, जिसे भारत के लिए एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।

शिखर सम्मेलन में हुई एक बड़ी घोषणा में भारत से यूरोप तक ट्रेड रूट बनाने की संकल्पना को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है, भारत से यूरोप तक जिस ट्रेड रूट को बनाने की संकल्पना प्रस्तुत की गई है, वह पश्चिम एशिया से होकर गुजरेगा और तैयार हो जाने पर चीन के मॉडर्न सिल्क रूट की काट साबित होगा, इस ट्रेड रूट का ऐलान पूरी दुनिया के लिए काफी महत्वपूर्ण मायने रखता है। दिल्ली घोषणापत्र में यूक्रेन युद्ध का जिक्र करते हुए देश में व्यापक, न्यायसंगत और स्थायी शांति का आह्वान किया गया, जिसमें सदस्य देशों से इलाकों पर कब्जा करने के लिए ताकत के इस्तेमाल या किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता के खिलाफ कार्य करने से बचने का आग्रह किया गया है। घोषणापत्र में कहा गया कि परमाणु हथियारों का इस्तेमाल या इस्तेमाल की धमकी अस्वीकार्य होनी चाहिए।

इसके साथ ही जी-20 शिखर सम्मेलन में भारत की प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से संपूर्ण विश्व को परिचित कराया गया, जबकि इस अवसर पर विश्व की ऐतिहासिक वस्तुएं भी नजर आईं।

प्रधानमंत्री जी ने स्वयं सम्मेलन में हिस्सा लेने आए राष्ट्राध्यक्षों व मेहमानों का स्वागत करने के लिए जो स्थान चुना था उसके पीछे कोणार्क के ऐतिहासिक सूर्य मंदिर के चक्र की प्रतिकृति लगी थी। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री को प्रतिकृति से परिचित भी कराया। वहीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार रात भारत मंडपम स्थल पर विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों और विश्व के अन्य नेताओं का भाव पूर्ण स्वागत किया। इस क्रम में विश्व धरोहर स्थल में शामिल बिहार का प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय बैकग्राउंड में दिखाई दे रहा था। ऋषि सुनक सहित कुछ नेताओं को प्रधानमंत्री मोदी विश्वविद्यालय के महत्व के बारे में बताते नजर आए। इससे पहले प्रधानमंत्री ने एक्स (ट्विटर) की डीपी बदलकर भारत मंडपम की तस्वीर लगाई थी, जिसमें केंद्र में नटराज की मूर्ति नजर आ रही थी। भारत मंडपम के सांस्कृतिक गलियारे में पाणिनी के व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्यायी, ऋग्वेद की पांडुलिपियां,

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज सी-3 जनकपुरी द्वारा श्रावणी पर्व पर प्रभात फेरी का सुन्दर आयोजन

आर्य समाज सी-3 जनकपुरी द्वारा श्रावणी पर्व का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें यज्ञ भजन और प्रवचनों के प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रतिदिन यज्ञ में आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने आहुति देकर 'सर्वेभवन्तु सुखिन:' की भावना को साकार किया और वेद प्रवचनों में ईश्वरीय व्यवस्था और कर्म सिद्धांत की शिक्षाओं से उपस्थित जनसमुदाय लाभान्वित हुआ। इसके साथ ही पूरे क्षेत्र में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा का बखान करने वाले प्रेरक भजन और ईश्वर भक्ति तथा जन जागृति का संदेश देने वाले भजन गाते हुए आर्य नर नारी और आर्य परिवारों के बच्चों ने भाग लिया। आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जय घोष से संपूर्ण वातावरण तरंगायित हो गया। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर प्रभात फेरी का आर्यजनों की ओर से स्वागत किया गया। यह संपूर्ण कार्यक्रम अपने आप में प्रेरक और सारगर्भित सिद्ध हुआ।

आर्य समाज सी-3 जनकपुर द्वारा निकाली गई प्रभात फेरी का दुर्गापुरी एवं रघु नगर में स्वागत करते हुए आर्यजन

दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों द्वारा श्रावणी पर्व के वृहद आयोजन संपन्न

विशेष यज्ञ, प्रेरक भजन, वेद प्रवचन, प्रभात फेरी और प्रतियोगिताओं के हुए सफल आयोजन

दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों में सभा से संबंधकों द्वारा यज्ञ एवं सत्संगो के हुए कार्यक्रम

वैदिक संस्कृति सदैव पर्व प्रिय है। हमारे यहां प्रत्येक पर्व को प्रेरणाप्रद रूप में आयोजित करने की परंपरा चलती आ रही है। गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्रावणी के आयोजन हेतु दिल्ली की आर्य समाजों को निर्देशित किया गया था। परिणाम स्वरूप सभी समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने पूरी निष्ठा के साथ विशेष यज्ञ, प्रवचन, भजन और स्कूलों के बच्चों की प्रतियोगिता के सफल आयोजन किए। इसके लिए सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इसके साथ ही यह निवेदन करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि बहते समय के प्रवाह के साथ ही महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती की तिथियां भी निकट आती जा रही हैं, इसके लिए भी हमें महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को और अधिक गति देने के लिए जुट जाना चाहिए। क्योंकि यह अवसर हम सबके लिए स्वर्णिम अवसर है, जो आने वाले समय में आर्य समाज के प्रेरक इतिहास में अंकित हो जाएगा। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज, आर्य संस्थान, आर्य प्रतिनिधि, आर्य परिवार, अपने-अपने स्तर पर उमंग, उत्साह के साथ दिव्य योजना के साथ तैयारी आरंभ करें।

आर्य समाज 15 हनुमान रोड द्वारा श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव संपन्न

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज हनुमान रोड द्वारा 30 अगस्त से 7 सितंबर 2023 तक श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर 30 अगस्त को सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार एवं वृहद यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें 5, 6 एवं 7 सितंबर 2023, लगातार तीन दिनों तक यज्ञ, भजन तथा वेद प्रवचनों के प्रेरक आयोजन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेश जी के कुशल निर्देशन में गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ अत्यंत प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ, सायं काल 7 से 8 बजे तक श्री देवेंद्र जी के सारगर्भित मधुर भजन सभी आर्यजनों को अत्यंत मनभावन लगे। आचार्य योगेश जी ने तीनों दिन 8 से 9 बजे तक वेद प्रवचनों के माध्यम से उपस्थित आर्यजनों को बहुत ही उपयोगी संदेश दिया। आपकी सरल सहज शैली अपने आप में अनुपम थी।

7 सितंबर 2023 को यज्ञ की पूर्णाहुति में चार हवन कुंडों पर आर्य समाज के प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, मंत्री श्री विजय दीक्षित जी, श्री संजय आर्य जी और अनेक अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कार्यकर्ता परिवार सहित यजमान बने और सभी ने विश्व कल्याण हेतु आहुति देकर प्रार्थना की। इसके उपरांत विशेष आयोजन में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 18 विद्यालयों के 17 प्रतिभागी सम्मिलित हुए और सब ने वर्तमान में योगीराज श्री कृष्ण की प्रासंगिकता विषय पर 7-7 मिनट के भाषण प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि वर्तमान में श्रीकृष्ण भक्तों के द्वारा जो उनका चरित्र प्रस्तुत किया जाता है वह बिल्कुल असत्य एवं अप्रासंगिक है। योगीराज श्री कृष्णा एक आदर्श योगी, ईश्वर भक्त, वेद अनुयाई, पुत्र, शिष्य, गुरु, पिता, पति, राजा, मित्र और हर रूप में अनुकरणीय तथा प्रेरणा के स्रोत थे। हमें उनकी आदर्श शिक्षाओं को अपनाकर जीवन में उन्नति, प्रगति और सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। इस प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के रूप में आचार्या प्रगति आर्या जी, डॉ. कर्ण देव शास्त्री जी और आचार्य अखिलेश आर्येन्दु जी थे। उनके निर्णय के अनुसार सभी प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार साहित्य के रूप में प्रदान किया गया और प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार सम्मान राशि के साथ प्रदान किए गए। आर्य समाज के प्रधान एवं दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया और सभी बच्चों को शुभकामनाएं देकर उत्साहवर्धन किया। पुरुस्कार देने वालों में कर्नल श्री रविन्द्र वर्मा जी प्रमुख थे। मंच संचालन मंत्री विजय दीक्षित जी ने किया।

आर्य समाज कीर्ति नगर में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का विशेष उद्बोधन

महर्षि दयानंद के सपनों को मिलकर करें साकार –धर्मपाल आर्य

3 सितंबर 2023 को आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संग में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में उपस्थित आर्यजनों को महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और उपकारों का स्मरण कराते हुए अपने संदेश में कहा कि 19वीं सदी में जब चारों ओर अज्ञान, अविद्या का अंधेरा छाया हुआ था तब महर्षि ने संपूर्ण विपरीत परिस्थितियों को अपने कठोर तप, त्याग और साधना के बल पर अनुकूल बनाते हुए आर्य समाज जैसे परोपकारी संगठन की स्थापना की थी। आज हम महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बताए रास्ते पर चल रहे हैं, लेकिन उनकी 200वीं जयंती और आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस हम सब के लिए बहुत ही प्रेरक अवसर है। इस अवसर पर हमें मिलकर महर्षि के सपनों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। जिससे संपूर्ण मानवजाति को वेद के अनुसार चलने के लिए हम दिशा दे सकें। आर्य समाज के अधिकारियों ने प्रधान जी का स्वागत किया और आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी तरह से मार्गदर्शन करते रहने की प्रार्थना की। इस अवसर पर प्रधान जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीना आर्या जी भी उपस्थित रहीं।

आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी द्वारा तीन दिवसीय श्रावणी पर्व संपन्न

आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी द्वारा 18 से 20 अगस्त 2023 तक श्रावणी पर्व के अवसर पर यज्ञ, भजन और वेद प्रवचनों का प्रेरक आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर सुयोग्य वैदिक विद्वान आचार्य हरि देव जी ने मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र और गीता एक वैदिक चिंतन विषय पर सारगर्भित प्रवचन दिए। आचार्य सुमन आर्य जी के मधुर भजनों से आर्यजन लाभान्वित हुए।

20 अगस्त 2023 रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति और समापन समारोह में क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों और अन्य आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर विद्वानों के वैदिक उद्बोधन से लाभ प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में मुख्यवक्ता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री विनय आर्य जी ने महर्षि द्वारा किए गए मानव कल्याण में कार्यों, देश में स्वराज्य स्थापित करने के लिए आर्य समाज के योगदान और आर्य समाज द्वारा अंधविश्वास उन्मूलन में किए गए कार्यों पर विशेष व्याख्यान दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री विक्रम नरूला जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। आर्य समाज के अधिकारी श्री जगदीश ग्रोवर, संतोष नरूला, सुदेश चढ़ा, रजनी अग्रवाल जी, और अन्य सभी सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम सफलता को प्राप्त हुआ।

-मंत्री, वीरेंद्र सरदाना

आर्य समाज शहदरा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर यज्ञ करते हुए

आर्य समाज खजूरी खास में श्रावणी पर्व सत्संग करते हुए

Taking Bath in the Source of Knowledge

Continuing the last issue

Swamiji got education about Ashtadhyai, Mahabhashya and other Vyakran books. He also studied other Aarsh Books. It does not mean that he got education from books only. The ideas he learnt form Guruji's life were more important for him. Yogi Dayanand was thankful to his Guru for growing devotion for old books, keeping away from bad customs like idol worship, and for learning self control.

At last time for studies was over. So, he was expected to pay 'Guru-dakshina'. He brought some cloves from certain home and said to guruji, "I have nothing more than half a seer of cloves as Guru Daskshina". Guruji said, "I will demand from you what you have with you" Then Daya Nand showed respect for Guruji joining both of his hands and touching feet of Guruji. Then Guruji ordered…. (it is a matter of pity that we donot have the actual words spoken by guruji. Different biography writers have used words as per their own wish. Words used by Pandi Lekh Rramji seem to be natural almost. It can be said that if Dandiji did not use the words, but their sense would be the similar. Here following words of Dandiji are being quoted…….)

Serve the country. Bring the books showing truth into lime light. Remove the wrong knowledge spread through different sects of society. Spread the message of Vedic Dharm". Daya Nand accepted the order and message of Guruji. Then Guruji blessed him and further said, "Books written by different persons have disrespect and condemming words for Ishwar (Almighty) and Rishis but not so in books written by Rishis. Never forget this".

Daya Nand promised to do as directed and got permission to go. What so ever he could not find in top of the hills, dense forests, flow of rivers, places of Mahants etc, he got in Mathura under the guidance of his Guru Dandi Swami Virja Nand. That was Vidya and Vivek (proper knowledge and sense of what and how to do and what not to do. Getting the above two, Brahmchari entered the field of world.

सनातन धर्म का अपमान नहीं सहेगा- भारत राष्ट्र

पृष्ठ 2 का शेष

धर्म को नष्ट करना तुम्हारे बस में ना था ना है और ना कभी होगा। हालांकि उदयनिधि स्टालिन के इस बयान की आलोचना करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्षी गठबंधन इंडिया पर निशाना साधा, उन्होंने कहा कि इन लोगों ने वोट बैंक की और तुष्टिकरण की राजनीति करने के लिए सनातन धर्म को समाप्त करने की बात की है, हमारी संस्कृति, हमारे इतिहास और सनातन धर्म का अपमान किया है। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी सनातन धर्म को खत्म कर देना चाहिए वाले बयान को इंडिया गठबंधन की राजनीतिक रणनीति का हिस्सा बताया। बीजेपी सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने आरोप लगाया कि उदयनिधि स्टालिन के बयान से मोहब्बत की दुकानदार का असली किरदार अब पूरी तरह उजागर हो गया है।

जबकि उदयनिधि स्टालिन की टिप्पणी पर सफाई देते हुए डीएमके के संयुक्त सचिव और प्रवक्ता सरवनन अन्नादुरई ने न्यूज एजेंसी एएनआई से कहा कि हमारे नेता उदयनिधि के बयान को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है, संदर्भ से बाहर कर दिया गया है और सबसे बड़े फर्जी समाचार विक्रेता ने एक ट्वीट किया है कि उदयनिधि स्टालिन ने नरसंहार के लिए कहा था। वे (बीजेपी नेता) कैसे कह सकते हैं कि उदयनिधि स्टालिन ने नरसंहार का आह्वान किया है? वह एक फर्जी खबर है, वह घृणास्पद भाषण है।

इस सारे घटनाक्रम पर गहराई से विचार करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि कहीं न कहीं सत्य सनातन हिन्दू धर्म को मानने वालों को यह विचार करना ही होगा कि

हम क्या थे, क्या हो गए
और क्या होंगे अभी
आओ, मिलकर के विचारें,
यह समस्याएं सभी

हमें अपने धर्म ध्वज को सुरक्षित रखने के लिए जागृत रहना होगा। **''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम''** अर्थात प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो, पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो। वेद के इस संदेश, उपदेश और आदेश को अपनाने से ही हम सुरक्षित रहेंगे और सत्य सनातन हिन्दू धर्म भी सुरक्षित रहेगा।

-संपादक

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद
परोपकार-शिष्टाचार-सदाचार-विद्या पुस्तक

57-परोपकार

अपने सब सामर्थ्य से
अन्यों के सुख-हेतु ।
तन-मन-धन से यत्न ही
'परोपकार का केतु' ।।74।।

58-शिष्टाचार

अवगुण तज शुभ ग्रहण
का जिसमें हो प्राकार ।
शिष्ट उसी को कह रहे
लौकिक 'शिष्टाचार' ।।75।।

59-सदाचार

जो कि सृष्टि से आज
तक वेद विहित आचार
'सदाचार' सत्पुरुष का
सत्य सत्य व्यवहार ।।76।।

60-विद्या पुस्तक

ईश्वरोक्त जो चार हैं
ऋग, यजु, साम, अथर्व ।
'विद्या पुस्तक' सत्य वे
वेद सनातन सर्व ।।77।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रेरक प्रसंग

महात्मा हंसराज-मर्यादा पुरुषोत्तम

हम आर्यलोग श्री रामचन्द्रजी महाराज को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। 'मर्यादा पुरुषोत्तम' व श्रीराम पर्यायवाची शब्द बन गए हैं। वास्तविकता यह है कि बड़ा बनने के लिए, ऊँचा उठने के लिए मर्यादाओं की सीमा में चलना पड़ता है और जो पुण्य-आत्माएँ बहुत ऊँचा उठती हैं, वे सब मर्यादाओं को स्थापित करती हैं।

महात्मा हंसराजजी भी एक ऐसे ही महापुरुष थे। वे भी मर्यादा पुरुषोत्तम थे। अर्थशुचिता, तप, त्याग व शिष्टता में उनका आचार-व्यवहार हमारे लिए एक उदाहरण है, एक मर्यादा है।

सन् 1919 ई. की घटना है। श्रीयुत महात्मा हंसराजजी पिंडी सैयदाँ जिला झेलम (पाकिस्तान) में डी.ए.वी. स्कूल का शिलान्यास रखने के लिए पधारे। थोड़ी दूरी पर जलालपुर कीकनाँ ग्राम पड़ता है। वहाँ के श्रद्धालु आर्यपुरुष वहाँ आये हुए थे। उन्होंने आग्रह किया कि जाते-जाते हमारे यहाँ भी चरण डालकर, हमारे मान को बढ़ावें। महात्माजी ने भक्तों की विनीत विनती स्वीकार की और चल पड़े।

सड़क ठीक न थी। स्थान-स्थान पर गड्ढे थे। महात्माजी सहर्ष पैदल चलते गए। ग्रामवालों ने गाजे-बाजे से सोत्साह स्वागत किया। आर्यसमाज मन्दिर में स्थान तंग था। वहाँ स्वर्णकारों की धार्मशाला में 'यज्ञों की महत्ता' पर आपने व्याख्यान दिया।

व्याख्यान के पश्चात् मण्डी बहाउद्दीन के मार्ग से लाहौर लौटना था। मार्ग रेतीला था, इस कारण ठीक न था। बड़ी कष्टप्रद यात्रा थी। सवारी के लिए घोड़े का प्रबन्ध किया गया। कुछ दूर तक घोड़े वाला साथ-साथ चलता रहा। महात्माजी को पता चला कि घोड़ा उनके लिए है।

आपने घोड़ा वापस भेजने का प्रबल आग्रह किया। भक्तों ने भी आग्रह किया कि आप घोड़े पर चढ़ें। आपने कहा कि मैं यह अनुमति नहीं दे सकता कि आप मेरी सुख-सुविधा पर धन का अपव्यय करें। फिर कहा यह कहाँ की शिष्टता है कि आर्यभाई तो पैदल चलें और मैं घोड़े पर सवार होकर चलूँ। मैं पिण्डी सैयदाँ से जलालपुर कीकनाँ आर्यभाईयों के साथ पैदल गया था, इसी प्रकार आर्य महाशयों के साथ अब मण्डी बहाउद्दीन भी पैदल ही चलूँगा। मुझे इसी में आनन्द की अनुभूति होती है।

जब बड़े-छोटे में ऐसा प्यार हो, जब नेता लोग आडम्बरों का परित्याग करें, जब नेता लोग अपने व्यवहार से जन-जन के साथ आत्मीयता का परिचय दें, तभी संगठन सुदृढ़ होता है। महापुरुषों का ऐसा आचरण सामाजिक भवन के लिए सीमैण्ट का कार्य करता है। अपने ऐसे व्यवहार के कारण महात्मा हंसराज मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने के अधिकारी बने। आवश्यकता है कि हम इस मर्यादा का पालन करके दिखावें। आज डी.ए.वी. वालों का आचरण ठीक इसके विपरीत है। जन धन से गाड़ियाँ लिए मौजें करने में इनका बड़प्पन है। ये लोग आकण्ठ भ्रष्टाचार हैं।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

पृष्ठ 4 का शेष

सूर्य द्वार नामक मूर्तिकला और मध्य प्रदेश के भीमबेटका गुफा चित्रों की डिजिटल तस्वीरें प्रदर्शित की गईं। साथ ही विश्व की ऐतिहासिक वस्तुएं भी नजर आईं। इसमें अमेरिका से चार्टर्स आफ फ्रीडम की प्रमाणित मूल प्रतियां, चीन से फहुआ (ढक्कन वाला जार), ब्रिटेन से मैग्नाकार्टा की दुर्लभ प्रति, लियोनार्डो दाविंची की उत्कृष्ट कृति मोनालिसा की डिजिटल तस्वीर, इंडोनेशिया का बाटिक सारोंग कपड़ा, ब्राजील की राष्ट्रीय संसद का माडल, अर्जेंटीना से पोंचो आदि का प्रदर्शन किया गया। कनाडा से सी मान्स्टर ट्रांसफार्मेशन मास्क, यूरोपीय संघ से विज्ञानी मैरी क्यूरी की कांस्य प्रतिमा, जर्मनी से वोक्सवैगन ओल्ड बीटल का लघु प्रतिकृति माडल, इटली से अपोलो बेल्वेडियर की कांस्य प्रतिमा को भी प्रदर्शित किया गया।

जी-20 के वीवीआईपी मेहमानों के लिए परोसे जाने वाले भोजन लंच और डिनर की भी आलीशान व्यवस्था की गई थी, जिसमें लंच और डिनर में शाकाहारी व्यंजन परोसे गए। दोपहर के भोज में तंदूर आलू, कुरकुरी भिन्डी, जाफरानी गुच्ची पुलाव और पनीर तिलवाला शामिल रहे, जबकि रात्रि के भोजन में पात्रम जैसे स्टार्टर्स थे, दही और चटनी के साथ ऊपर से बाजरे की पत्तियों के कुरकुरे टुकड़े डालकर सर्व किया गया, मुख्य कोर्स में वनवनम-फॉरेस्ट मशरूम, बाजरा और केरल के लाल चावल के साथ कटहल गैलेट और ब्रेड जैसे मुंबई पाव शामिल रहे, डेसर्ट में मधुरिमा, जो इलायची सुगंधित बार्नयार्ड बाजरे का हलवा था, अंजीर-पीच का कोपोट और दूध और गेहूं के नट्स के साथ अम्बेमोहर चावल के क्रिस्प थे, पेय पदार्थों में कश्मीरी काहवा, फिल्टर कॉफी, दार्जिलिंग चाय और पान के स्वाद वाला चॉकलेट शामिल था।

कई राज्यों के स्पेशल देसी व्यंजन भी जी-20 में मेहमानों को परोसे गए, जिसमें बिहार का प्रसिद्ध लिट्टी चोखा, राजस्थान का दाल बाटी, चूरमा, पंजाब का फेमस दाल तड़का, दक्षिण भारत का उत्तपम, इडली, मसाला डोसा और मीठे में जलेबी भी परोसी गई। यही नहीं इनमें गोलगप्पा, दही भल्ला, समोसा, भेलपुरी, वड़ा पाव और चटपटी चाट भी शामिल रही, इस तरह भारत के आदर्श आतिथ्य की संस्कृति का भी विश्व स्तर सफल रही।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

होने के कारण भी खांसी हो जाती है। काली खांसी (whooping cough) मुख्य रूप से बच्चों की बीमारी है जिसमें खांसते-खांसते मुंह लाल यहां तक कि नीला हो जाता है, शुरू में नाक से पानी बहता है, शरीर का तापमान भी थोड़ा अधिक रहता है। कफ निकलने पर रोगी को कुछ आराम मिलता है। यह दिन और रात में कई बार हो जाती है।

4- **छाती की हड्डियों का दर्द (Inter costal neuralgia) प्राय:** छाती की नसों या स्नायु मांसपेशियों में किसी विकार, खून की कमी, पसलियों तथा रीढ़ की हड्डी की सूजन व छाती के अन्दर गिल्टियों की सूजन आदि के कारण होता है।

दमा तथा अन्य श्वास रोगों के लिए एक्युप्रेशर

दमा (asthma) तथा श्वास प्रणाली से संबंधित लगभग सारे रोग (respiratory disorders) एक्युप्रेशर द्वारा ठीक हो सकते हैं। इतना अवश्य है कि दमा तथा श्वास संबंधी कुछ पुराने रोगों को इस पद्धति द्वारा पूरी तरह जाने में कुछ समय लग सकता है। अगर एक्युप्रेशर द्वारा शुरू के पांच-सात दिनों में कुछ उत्साहजनक परिणाम न मिलें तो निराश नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि एक्युप्रेशर द्वारा इन रोगों में लाभ न पहुंचे।

महर्षि दयानन्द उवाच परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

'अहं ब्रह्मास्मि' वेदों में नहीं:- 'अहं ब्रह्मास्मि' वाक्य वेदों में नहीं आया है, प्रत्युत्-उपनिषद् में आया है और वहाँ भी यदि उसे अगले शब्दों से मिलाकर पढ़ा जाए तो यह आशय नहीं निकलता कि जीव ब्रह्म है। **(म. द. जी. च. पृ. 375)**

अज्ञान:- जब तक मनुष्य में अति अज्ञान और कुसंग से भ्रष्ट बुद्धि होती है, तब तक दूसरों के साथ अति ईर्ष्या-द्वेषादि दुष्टता नहीं छोड़ता। **(सत्यार्थ प्रकाश पृ. 415)**

आप्त किसे कहते है?:- जो-जो सत्यवादी, सत्यमानी, पक्षपात रहित सब के हितैषी विद्वान् सबके सुख के लिए प्रयत्न करें वे धार्मिक लोग आप्त कहाते हैं। **(व्यवहारभानु पृ0 13)**

आनन्द कारक कर्म:- नित्य विद्यादान ग्रहण और सेवा कर्म करना है, वही परस्पर आनन्दकारक है। **(ऋ. भा. भू. पृ. 240)**

आपसी फूट:- आर्यों की आपस की फूट और ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के कारण दूसरे वर्ण के लोगों को वेद नहीं पढ़ाये, परिणाम स्वरूप हमारे धर्म के इतने खण्ड हो गये हैं कि अब यह जानना कठिन हो गया है कि उनमें से कौन-सा ठीक है।
(म. दयानन्द जी. च. पृ. 298)

चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो। **[पूना प्र. व (उपदेशमंजरी) पृ. 83]**

आर्य और हिन्दू का अर्थ:- हिन्दू, सत्सभा का नाम आर्यसमाज रखना चाहिए, क्योंकि हमारा नाम आर्य और हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त सनातन वेदोक्त है। आर्य के अर्थ श्रेष्ठ विद्वान, धर्मात्मा के तथा हिन्दू शब्द यवन आदि ईर्ष्यक लोगों का बिगाड़ा और बदला हुआ है। जिसके अर्थ गुलाम, काफिर काला आदमी आदि हैं।
(म. दया. जी. च. पृ. 415)

आचरण:- प्रधान पुरुष बहुत विचार से उत्तम आचरण करे कि जिससे उसको संसार के बिगड़ने का अपराध न लगे।
(ऋ. द. प. वि. भा. 2 पृ. 745)

हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

शोक समाचार

आचार्य श्री रघुमन्ना जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान एवं वेद गुरुकुल भाग्य नगर, हैदराबाद के संथापक आचार्य रघुमन्ना जी का हृदय गति रुकने से अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति निष्ठा और राष्ट्रभक्ति प्रेरक वक्ता के रूप में आपकी प्रेरणा सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 11 सितम्बर, 2023 से रविवार 17 सितम्बर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 13-14-15 सितम्बर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 13 सितम्बर, 2023

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित

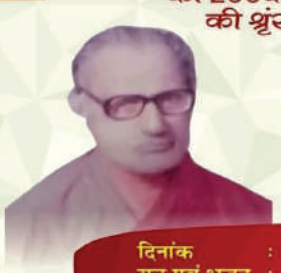

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान,
गौशाला के संस्थापक, प्रसिद्ध आर्य नेता

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
(लाला रामगोपाल शालवाले)

स्मृति दिवस

विषयः महर्षि दयानन्द एवं गौरक्षा

दिनांक	:	शनिवार, 16 सितम्बर 2023
यज्ञ एवं भजन	:	सायं 4:00-5:00 बजे
ब्रह्मा	:	आचार्य यशपाल शास्त्री
स्मृति सभा	:	सायं 5:00-6:30 बजे
भजनोपदेशक	:	प० कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर)

स्थान

महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन केंद्र (गौशाला), गाजीपुर, निकट कन्टेनर डिपो, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि	:	श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य (चेयरमैन, जे.बी.एँम ग्रुप)
अध्यक्षता	:	श्री बच्चन सिंह आर्य (प्रधान, गौशाला गाजीपुर)
आशीर्वाद	:	स्वामी रामस्वरूप ब्रहमचारी (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, संत महासभा)
विशिष्ट अतिथि	:	श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
	:	श्री सुरेन्द्र कुमार रैली (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य)
	:	श्रीमती सुषमा शर्मा (प्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाज सेवी)
मुख्या वक्ता	:	आचार्य विद्याप्रसाद मिश्रा (प्रसिद्ध वैदिक विद्वान)

निवेदक

महिपाल आर्य, उपप्रधान | पुष्पेन्द्र आर्य, उपप्रधान | देवेश चौधरी, कोषाध्यक्ष | विनय आर्य, मंत्री | अशोक गुप्ता, प्रधान, वेद प्रचार मंडल पूर्वी दिल्ली

महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन केंद्र (गौशाला), गाजीपुर
सम्पर्क सूत्रः 9560606777

केवल आर्य संदेश टीवी पर

LIVE सीधा प्रसारण देखें

www.aryasandeshtv.com

JioTV | Jio tv+ | dailyhunt | Google Play | YouTube पर उपलब्ध

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता पॉकेट संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मस्जिद वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on vedicprakashan.com and amazon bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

JioTV | Jio TV+

आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल

आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV

अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी

Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह